❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।

अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 40, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 जनवरी, 2017 से रविवार 5 फरवरी, 2017
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की वार्षिक बैठक सम्पन्न

22 जुलाई 2017 को होगा तालकटोरा स्टेडियम में भव्य सांस्कृतिक उत्सव

आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा दान देने जाएंगे आर्य विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी

आर्य विद्या परिषद दिल्ली की वार्षिक बैठक बुधवार 18 जनवरी 2017 को एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, श्री ए. के. धवन विद्यालय चेयरमैन श्री सत्यानन्द आर्य जी, श्रीमती अंजली कोहली जी, श्रीमती डॉ. उमा शशि दुर्गा जी, श्रीमती वीना आर्य जी, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं विभिन्न विद्यालयों के चेयरमैन, प्रबंधक, प्रधानाचार्य व अध्यापक/अध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

बैठक का शुभारम्भ गायत्री मंत्र एवं विश्वानि देव मन्त्रोच्चार के साथ हुआ। सर्वप्रथम दयानन्द माडल स्कूल विवेक विहार के संस्थापक एवं प्रधान श्री विशम्भर नाथ भाटिया जी का 7 जनवरी 2017 को निधन हो जाने पर उन्हें दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गयी।

– शेष पृष्ठ 7 पर

बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

- ★ आर्य शिक्षण संस्थाओं की स्मरणिका का होगा प्रकाशन
- ★ दिल्ली के आर्य विद्यालयों में शिक्षकों व बच्चों की कार्यशालाएं
- ★ विभिन्न विद्यालयों में होगी अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताएँ

एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में सम्पन्न आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की वार्षिक बैठक में उपस्थित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र रैली , महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं बैठक में उपस्थित सभी आर्य विद्यालयों के पदाधिकारीगण।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में
आर्य विद्यालयों में नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न
10 हजार से अधिक बच्चों ने दी परीक्षा

विस्तृत समाचार एवं सूचना अगले अंक में

फल्गुन कृष्ण 10 तद्नुसार मंगलवार 21 फरवरी, 2017
नगर वन पार्क, पालम रोड, सागरपुर, नई दिल्ली-110046

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

यज्ञ : सायं 3:15 बजे भजन संध्या : सायं 4:15 बजे प्रीतिभोज : सायं 7 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज सागरपुर एवं प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अतन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया का उद्घाटन एवं
वैदिक जनजातीय महासम्मेलन बामनिया : 17 फरवरी, 2017

उद्घाटन : महाशय धर्मपाल जी महासम्मेलनः प्रातः 11 बजे अध्यक्षता : श्री सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक आर्यजन अभी से अपनी मुम्बई राजधानी से टिकटें स्वयं आरक्षित करवा लें अभी टिकटें उपलब्ध हैं। बामनिया जिला झाबुआ के अन्तर्गत है। 15 फरवरी को मुम्बई राजधानी से रतलाम (म.प्र.) के लिए प्रस्थान करें। 16 की प्रातःकाल रतलाम से बामनिया तथा 17 की रात्रि बामनिया से रतलाम रेलवे स्टेशन तक ले जाने के लिए गाड़ियां उपलब्ध रहेगी। 16 को क्षेत्रीय आश्रमों/बालवाड़ियों का भ्रमण कार्यक्रम रहेगा।अधिक जानकारी के लिए श्री जोगेन्द्र खट्टर जी 9810040982 से सम्पर्क करें।

प्रकाश आर्य (मन्त्री) विनय आर्य (उपमन्त्री) — सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
आचार्य दया सागर (संयोजक) आचार्य जीववर्धन (सहसंयोजक) — अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, झाबुआ
इन्द्र प्रकाश गांधी (प्रधान) — म. भा. आर्य प्रतिनिधि सभा

वेद-स्वाध्याय

पंख खुले हैं

सहस्त्राहृणयं वियतावस्य पक्षौ हरेर्हंसस्य पततः स्वर्गम्।
स देवान्त्सर्वानुरस्युपदद्य संपश्यन् याति भुवनानि विश्वा।। -अथर्व. 10/8/18
ऋषिः **कुत्सः।।** देवता- **आत्मा।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **स्वर्गं पततः**=स्वर्ग को जाते हुए **अस्य**=इस **हरेः हंसस्य**=ह्रियमाण या हरणशील, जीवात्मा हंस के **पक्षौ**=पंख **सहस्त्राहृणयम्**= सहस्त्रों दिनों से **वियतौ**= खुले हुए हैं, फैले हुए हैं **सः**=वह हंस **सर्वान् देवान्**=सब देवों को **उरसि**= अपने हृदय में **उपदद्य**= लिये हुए **विश्वा भुवनानि**= सब भुवनों को **संपश्यन्**= देखता हुआ **याति**=जा रहा है।

विनय - मनुष्य प्रतिक्षण चेष्टायमान है। जीव को दिन-रात किसी-न-किसी अभीष्ट के पाने की चाह, या किसी के दुःख को हटाने की चाह लगी रहती है और उसके लिए वह सदा कुछ-न-कुछ करता रहता है। जीव को तब तक चैन नहीं मिल सकता जबतक कि वह उस अवस्था में न पहुँच जाए, जहाँ उसे कुछ कमी न रहेगी, जहाँ उसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो जाएँगी, सब दुःख समाप्त हो जाएँगे। उस स्वर्गलोक को पाने के लिए यह 'हरि' (इधर-उधर फिरनेवाला) हंस न जाने कब से उड़ रहा है। यह अपने अभीष्ट लोक को कब पहुँचेगा? यह लगातार ज्ञान और कर्म के सहारे से उस स्वर्ग को न जाने कब से ढूँढ रहा है! सुख-प्राप्ति के विषय में उसे जो ज्ञान मिलता है उसके अनुसार वह कर्म करता है, कर्म करने के बाद उसे कुछ अन्य नया अनुभव (ज्ञान) मिलता है, तब वह उसके अनुसार कर्म करता है। इस प्रकार यह हंस अपने ज्ञान और कर्म (अन्दर से बाहर की ओर चेष्टा और बाहर से अन्दर की ओर चेष्टा, प्राण और अपान) के पंखों को हिलाता हुआ उड़ा चला जा रहा है। हजारों दिन बीत गये हैं पर उसके पंख फैले ही हुए हैं। न उसे अभीष्ट स्वर्ग मिलता है और न वह अपनी उड़ान बन्द करता है, परन्तु मजेदार बात यह है कि स्वर्ग के सब देवों को, सब देव-गुणों को अजरत्व, अमरत्व, निष्कामत्व, पूर्णत्व आदि सब देवत्वों को-अपने हृदय में लिये हुए फिर रहा है। वह लाखों योनियों में, लोकों में, नाना देशों में, उड़ रहा है। इस जगत् की सब उत्पन्न वस्तुओं, सब भुवनों को देखता हुआ जा रहा है, पर सब देश तो उसके हृदय में ही स्थित हैं, अतः उसे जब कभी स्वर्ग की प्राप्ति होगी, तब उसे अपने हृदय में ही होगी। तबतक वह असंख्यात स्थानों में, प्रभु की इस अगम्य सृष्टि के करोड़ों भुवनों को देखता हुआ विचार रहा है, चौबीस घण्टे ज्ञान और कर्म की कुछ-न-कुछ चेष्टा करता हुआ स्वर्ग को ढूँढ रहा है, अपने इन पंखों को फड़फड़ाता हुआ निरन्तर गति कर रहा है। अहो! यह कब अपने लक्ष्य पर पहुँचेगा? किस दिन अपने पंखों को समेटकर बैठेगा? इसके पंख तो हज़ारों-हज़ारों दिनों से खुले हुए हैं!

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

नया पाकिस्तान बनाने की तैयारी

नेताओं के दिमाग से लेकर आम जनजीवन तक जातिप्रथा अपने पूरे चरम पर दिख रही है। भले ही हमें आज यह एक-आध घटना लगे लेकिन भेदभाव के इस बीज को मुक्ति मिलती नहीं दिख रही है। शायद आने वाले दिनों में यह बीज एक विशाल वृक्ष बनकर खड़ा हो जायेगा। हाल ही में मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में जो हुआ वह किसी ने कभी सोचा भी नहीं होगा। यहां बच्चों ने केवल इस बात पर मिड डे मील खाने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह एक दलित महिला ने अपने घर पर बनाया था। केवल 12 बच्चों ने ही खाना खाया बाकी बच्चों ने यह कहते हुए खाने का बहिष्कार कर दिया कि यह खाना एक छोटी जाति की महिला ने अपने घर पर बनाया है जिसे हम नहीं खा सकते।

कुछ लोग सोचेंगे इस खबर से नये पाकिस्तान बनने का क्या अर्थ है! परन्तु अर्थ है और इतना ही गहरा है जितना एक बीज के अन्दर छिपे एक पेड़ का अस्तित्व। बस उसे मिट्टी खाद पानी मिल जाये तो वह पनप जाता है। हम हिन्दू एकता के कसीदे पढ़ते हैं पर किसी के छू जाने भर से कई जगह हमारी एकता सरकती दिखाई देती है। अब सवाल यह है यदि बच्चों को मिड-डे मील परोसने वाली कोई मुस्लिम या ईसाई महिला होती तो क्या बच्चे उस भोजन को खाने से इंकार करते? शायद नहीं! आखिर किसने सिखाया उन मासूम बच्चों को कि यह अछूत है, इसके हाथ का बना खाना खाने से हम अछूत हो जायेंगे?जवाब शायद सबके मन में हो पर जबान पर आने से अटक रहा हो। क्या आपको नहीं लगता कि जाति प्रथा ने देश की 50 फीसदी आबादी को अछूत और सामाजिक स्तर पर कमजोर बनाकर रख दिया। यदि देश की सामाजिक दशा ठीक रही होती तो क्या बड़ी संख्या में धर्मान्तरण होता? यदि धर्मान्तरण नहीं होता तो क्या साम्प्रदायिक बटवारे का प्रश्न उठता? क्या पाकिस्तान बनता?

70 साल बीत गये पीढ़ियां बदल गयी लेकिन सोच नहीं बदली। कई जगह आज भी अगर किसी हैण्डपम्प पर चले जाए पानी के लिए तो नल, बाल्टी पर अछूत हाथ लग जाये तो बाल्टी अछूत, हाँ यदि कोई ईसाई या मुस्लिम आ जाये तो कोई बात नहीं उसका सत्कार करते हैं। फिर अपनों से यह फासला क्यों? स्वामी श्रद्धानन्द जी कहा करते थे कि मन की बुराइयों को मारो, तभी सारे समाज का उद्धार होगा। अगर आपने खुद को सुधार लिया तो समाज को और फिर देश को सुधरने में देर नहीं लगेगी। कुछ लोगों का मानना है कि भारत में इस्लाम का प्रचार-प्रसार बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ है जबकि हिन्दुओं के इस्लाम ग्रहण करने का सबसे मुख्य कारण रहा जातिवाद, घोर अन्ध विश्वास और हिंसक बल प्रयोग। इस प्रकार, जातिवाद के कुचक्र के कारण अनेक स्थानों पर हजारों हिन्दू वीरों को परिवार सहित जिन्दा रहने के लिए ऐसी घोर अपमानजनक शर्त स्वीकार करनी पड़ी। मुस्लिम आक्रान्ताओं ने पूरे हिन्दू समाज पर एक मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने की रणनीति पर काम किया और उन्होंने समाज से बहिष्कृत जातियों को साथ लेकर भारत के धार्मिक आंकड़ों को बदलकर रख दिया।

बहरहाल हम यहाँ हज़ार वर्षों से भी अधिक चले धर्मांतरण का वह सबसे अधिक मार्मिक और पीड़ाजनक अध्याय नहीं उठाना चाहते बस यह बताना चाहते हैं कि हमारी हजार वर्षों की गुलामी का कारण जातिवाद रहा, भारतवर्ष के खंड-खंड बाँटने का कारण जातिवाद रहा। आज थोड़ा गंभीरता से अध्ययन करें तो जानेंगे कि भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का शोर करने वाले खुद को कहाँ पाएंगे! इस समय देश की हिन्दू आबादी लगभग 80 करोड़ है जिसमें 50 फीसदी से ज्यादा वे लोग है जिन्हें शूद्र मानसिकता के लोग अछूत मानते हैं। यदि ये लोग इसी तरह प्रताड़ित व अपमानित होते रहे तो हिन्दू कहाँ रह जायेंगे? ध्यानपूर्वक देखें तो पूर्वोत्तर राज्य ईसाई बहुल हो चुके हैं। केरल, कश्मीर, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, आसाम के एक बड़े हिस्से समेत उत्तर प्रदेश के धार्मिक आंकड़े एक नजर में ही बहुसंख्यक हिन्दू होने के गुमान को ढीला कर देते हैं।

कुछ लोग कहते हैं जातिवाद तो पुरातन काल से प्रभावी था। इसमें किसी का क्या दोष! लेकिन यह बिल्कुल सच नहीं है। हिन्दुओं में आदिकाल से गोत्र और वर्ण व्यवस्था थी, परन्तु जातियाँ नहीं थीं। वेद सम्मत वर्ण व्यवस्था समाज में विभिन्न कार्यों के विभाजन की दृष्टि से लागू थी। यह व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर सीधे-सीधे कर्म पर आधारित थी। कोई भी वर्ण दूसरे को ऊँचा या नीचा नहीं समझता था। इसका सबसे बड़ा उदाहरण अपने प्रारंभिक जीवन में शूद्र कर्म में प्रवृत्त वाल्मीकि जी अपने कर्मों में परिवर्तन के बाद पूजनीय ऋषियों के वर्ण में मान्यता पा गए तो वे तत्कालीन समाज में महर्षि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मर्यादा पुरषोत्तम राम के विवाह उपरांत सभी प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को दान और उपहार देने के लिए वाल्मीकि जी को ही विशेष आदर के साथ आमंत्रित किया था।

लेकिन समय के साथ विसंगतियां पनपती गयीं। समाज पर प्रभुत्व स्थापित करने वाले लोगों ने धार्मिक व सामाजिक ताना-बाना बिगाड़कर रख दिया। सम्मान और आत्ममुग्धता के भूखे तत्कालीन राजाओं ने भी इन्हीं विसंगतियों और कुप्रथाओं को सच मान लिया। जिस कारण समाज के बड़े निर्धन वर्ग को अछूत करार दिया गया। परन्तु यह लोग फिर भी छुप-छुप कर अपने सभी उत्सव मनाते रहे और सनातन धर्म की पताका को अपने हृदयाकोश में लहराते रहे। जिन्हें उस समय बड़े वर्ग ने जाति के नाम पर प्रताड़ित किया तथा मुस्लिम आततायियों ने धर्म के नाम पर। लेकिन वे लोग फिर भी अपने धर्म मार्ग पर डटे रहे। क्या उनका यह त्याग कम रहा है? जिनका सब कुछ खण्ड-खण्ड हो चुका था परन्तु उन्होंने धर्म के प्रति अपनी निष्ठा को लेशमात्र भी खंडित नहीं होने दिया। जरा सोचिये, हिन्दू समाज पर इन कथित अछूत लोगों का कितना बड़ा ऋण है। यदि उस के कठिन काल में ये लोग भी दूसरी परिणति वाले स्वार्थी हिन्दुओं की तरह ही तब मुसलमान बन गए होते तो सोचो आज अपने देश का इतिहास-भूगोल क्या होता? और सोचिये, आज हिन्दुओं में जिस वर्ग को हम अनुसूचित जातियों के रूप में जानते हैं, उन आस्थावान हिन्दुओं की कितनी विशाल संख्या है जो मुस्लिम दमन में से अपने धर्म को सुरक्षित निकालकर लाई है। क्या इनका अपने सनातन की रक्षा में पल-पल अपमानित होना कोई छोटा त्याग था? क्या इनका त्याग ऋषि दधीचि के त्याग की श्रेणी में नहीं आता? यदि आता है तो अब यह छूत-अछूत का आडम्बर हटा देना होगा वरना धर्मपरिवर्तन के कुत्सित जाल में फंसकर आगे भी पाकिस्तान बनते रहेंगे। ***-सम्पादक***

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

ज्योतिषी ने महिला से कहा ....!

कर्म से ज्यादा भाग्य पर विश्वास'' जिस कारण आज अंधविश्वास एक बहुत बड़ा व्यापार बन गया है। व्यापार धन-सम्पत्ति तक सीमित रहता तो एक पल को इतना कष्ट नहीं होता किन्तु अब यह व्यापार चढ़ावे में जिस्म भी मांगने लगा है। शायद भगवान से ज्यादा तथाकथित ज्योतिषों पर विश्वास करने वालों को यह घटना सोचने पर मजबूर कर देगी कि ज्योतिष के लालच की यह लपलपाती जीभ अब किस तरह बहू-बेटियों की अस्मत तक पहुँच चुकी है। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू में कथित ज्योतिषी राम कृष्ण शर्मा ने एक महिला से कहा कि खुद पर से सारे दोष हटाने के लिए एक ब्राह्मण के साथ सोना होगा। महिला ने बताया कि उसने मुझसे मेरे कपड़ेउतारने को कहा ताकि वह कोई भभूत मेरी नाभि पर लगा सके। जिसके लिए मैंने मना कर दिया। मेरे मना करने पर उसने खुद से मेरे कपड़े उतारने की कोशिश करने लगा। मैं वहां से बड़ी मुश्किल से भाग पाई।

यह कोई एक अकेली घटना नहीं है इससे पहले भी इस तरह के ऐसे बहुत सारे मामले लोगों की नजरों में आ चुके हैं। लेकिन ज्योतिषों का सामाजिक तिरस्कार करने के बावजूद लोग अभी भी इनसे काल्पनिक दोष दूर करने कतार में खड़े हैं। कुछ समय पहले कोलकाता प्रमोदगढ़ में एक ज्योतिषी भरतचंद्र मंडल को नौवीं कक्षा की छात्रा से दुष्कर्म के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार किया था। पीड़िता बच्ची अपना भविष्यफल जानने पहुंची थी। साल 2016 आंध्रप्रदेश में एक परिवार ने ज्योतिषी के चक्कर में आकर अपनी गभवती बहू को ही जलाकर मारने की कोशिश की। दरअसल, वह महिला गर्भवती थी और ज्योतिष ने कहा था कि वह इस बार भी लड़की को ही जन्म देगी। इस बात पर ही परिवार ने महिला को जला दिया। मामला यही नहीं रुकता कई बार तो यह लोग मानवता को शर्मसार करने से भी बाज नहीं आते। दिल्ली से सटे साहिबाबाद के राजेंद्र नगर में बच्चे के जन्म को लेकर एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कि नवजात शिशु अपने पिता पर भारी पड़ेगा। यह उसके लिए अमंगल साबित होगा। पति ने पत्नी व शिशु को ही घर से बेघर कर दिया गया।

आखिर इस आधुनिक युग में भी यह कहानी कहाँ से शुरू होती है? जब हम सुबह सोकर उठते हैं तो तमाम न्यूज चैनल पर यह ज्योतिष बाबा बैठे मिलते हैं जो ग्रह, योग, मंगल अमंगल, आदि की बात करते हुए समाज में अंधविश्वास के बीज बोते मिल जायेंगे। जिस कारण समाज में व्याप्त अन्धविश्वास और भविष्य के प्रति अनिश्चितता की स्थिति के कारण ज्योतिषियों ने एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है इससे समाज का कोई भी वर्ग अछूता नहीं रहा है। आप अन्धविश्वास का जाल सुबह टी.वी. चालू करें हर चैनल पर हर ज्योतिषी द्वारा भविष्यफल बताया जा रहा है। क्या पता किसी का सही हो जाए! यही सोचकर लोग टोने-टोटके याद करने लग जाते हैं। बिल्ली रास्ता काटे तो क्या करें, कुत्ता कान खुजाये तो इस दोष से कैसे बचना है। छिपकली पूछ हिलाए तो कितना चढ़ावा चढ़ाये आदि-आदि किस्म का प्रोपगेंडा चलाया जा रहा है।

इतने में अखबार भी आ ही जाएगा अब उसमें सबसे पहले अन्धविश्वास वाला पन्ना ही खोले और राशिफल रट लें किस दिशा में जाना है और किस रंग का कपड़ा पहनना है। बच्चा स्कूल जाता है तो उसके कमरे की दिशा बताई जा रही है। पति का कारोबार यदि किसी वजह से कम हो गया तो उसके लिए अलग से टोटके के प्रावधान बताये जा रहे हैं। हनुमान यंत्र, लक्ष्मी यंत्र, फलाना यंत्र, ढिमका यंत्र घर रखने से सारे क्लेश दूर करने की बात बताई जा रही है। कार में आगे फटा हुआ जूता लटका लीजिये और अन्दर नींबू, बस वही आपकी कार को सही रखेगा। कार के अन्दर दुर्घटना नाशक यन्त्र लगवा ही लीजिए फिर कितनी भी रफ्तार पर चलाएं, कहीं भी मोड़ दे सवाल ही नहीं कि कुछ हो जाए। अपने दिमाग का प्रयोग नहीं करना चाहिए, बहुत बुरी बात होती है। सपने में यदि सांप, गधा, कबूतर या कुत्ता आदि दिख जाए तो अगली सुबह ज्योतिषी के द्वार पर पहुंच जाएं। उपाय पूछने, ध्यान रहे जेब भरकर जाये खाली जेब वाले की तो ये लोग शक्ल तक नहीं देखते कुंडली जाये भाड़ में।

इसके बाद अपने मित्र समूह में बैठे और इन लोगों का विज्ञापन चालू कर दें कि अमुक ज्योतिष को हाथ दिखाए तो सब बता देता है। ज्योतिषी ने कहा नौकरी नहीं मिलेगी तो नहीं मिली, सन्तान लङका होगा तो वही हुआ। कुछ इस तरह इनके मंगल गीत गाते लोग मिल जायेंगे! सच तो यह है कि अन्धविश्वास का व्यापार सौ प्रतिशत लाभ वाला व्यापार है निवेश बस 50 रुपये की किताब ले आये और इस अन्धविश्वास की दुनिया में आपका प्रवेश। भारत जैसे अन्धविश्वासी जनसंख्या वाले देश में व्यक्ति कितनी भी उन्नति कर ले कितना ही शिक्षित क्यों न हो जाए लेकिन यहां पर ज्योतिष एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें कभी हानि की संभावना ही नहीं है। वैश्विक मंदी मे भी ज्योतिष के धंधे मे मंदी नहीं आती है बल्कि उस समय पर तो ज्योतिष का व्यावसाय अपने चरम पर होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए ग्रहों-नक्षत्रों को टटोलने व प्रसन्न करने के लिए ज्योतिषी की तिजोरी अन्य दिनों की अपेक्षा और अधिक भरते हैं। अन्धविश्वास के कारण ही भविष्य बताने, तकदीर बदलने वालों के धन्धे में चार चांद लग गए हैं पर इनके चक्कर में आकर कितने बर्बाद होकर, मर गये किसी को नहीं पता न कोई सरकारी आंकड़ा।

माँ ज्योतिष से पूछकर अपने घरेलू काम कर रही है, बाप कारोबार या नौकरी ज्योतिष के बताये रास्ते पर कर रहा है और बच्चों को कह रहे हैं पढ़ ले बेटा! भला वे बच्चे क्यों पढ़ेंगे? वे भी ज्योतिष से कुछ रूपये देकर सारे दोष दूर करा लेंगे, सरकार के अन्धविश्वास के प्रति उदासीन रवैये के कारण अन्धविश्वास से भरपूर कार्यक्रमों की संख्या बढ़ती जा रही है जिसके कारण युवाओं का ज्योतिष के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है और वह कर्म के महत्त्व को न समझकर ग्रहों-नक्षत्रों में अपने भविष्य की रुपरेखा तलाश रहें हैं। इसी कारण से भविष्य बताने, भाग्य बदलने वाले आज हर गली हर नुक्कड़ पर अपनी दुकान सजाए बैठे हैं। समाज का कोई वर्ग ऐसा नहीं है जो इन भाग्य बदलने वालों के पास न जाता हो। अच्छे-अच्छे शिक्षित व्यक्ति भी इन तकदीर बदलने वालों के पास कतार में खड़े हुए देखे जा सकते हैं। उनमे से कोई किसी फुटपाथ पर रखे हुए तोते से अपना भविष्य पूछते नजर आते हैं तो कोई वातानुकूलित कमरे मे बैठे हुए मदारी से। कोई सौतन से छुटकारा दिला रहा है, कोई 5 मिनट में मनचाही लड़की पटाने के नाम पर युवाओं को बरगला रहा है। जमीन जायदाद का झगड़ा हो या परीक्षा में सौ फीसदी अंक सब का समाधान ज्योतिष बाबा के पास होकर रहेगा।

आमतौर पर मनुष्य प्राणी जगत में सबसे बुद्धिमान प्राणियों की सूची में आता है लेकिन आज पढ़े लिखे अधिकारी नेता, अभिनेता, क्रिकेटर अनहोनी की आशंका से पशु बनकर रह गये. पशु भी कहना पशुओं का अपमान है क्योंकि पशु अपनी दिनचर्या में अपने दिमाग का इस्तेमाल तो करते हैं। ये लोग तो दूसरे के बताये रास्ते पर चल रहे हैं जिसका फायदा ये लोग बखूबी उठा रहे हैं, किसी से धन बटोरकर किसी से जिस्म की मांग कर क्योंकि यह जानते हैं जो लोग इनके पास आते हैं इसका मतलब उनके पास खुद का विवेक नहीं होता है।

-राजीव चौधरी

....अच्छे-अच्छे शिक्षित व्यक्ति भी इन तकदीर बदलने वालों के पास कतार में खड़े हुए देखे जा सकते हैं उनमें से कोई किसी फुटपाथ पर रखे हुए तोते से अपना भविष्य पूछते नजर आते हैं तो कोई वातानुकूलित कमरे मे बैठे हुए मदारी से। कोई सौतन से छुटकारा दिला रहा है। कोई 5 मिनट में मनचाही लड़की पटाने के नाम पर युवाओं को बरगला रहा है। जमीन जायदाद का झगड़ा हो या परीक्षा में सौ फीसदी अंक सब का समाधान ज्योतिष बाबा के पास होकर रहेगा।

आमतौर पर मनुष्य प्राणी जगत में सबसे बुद्धिमान प्राणियों की सूची में आता है लेकिन आज पढ़े लिखे अधिकारी नेता, अभिनेता, क्रिकेटर अनहोनी की आशंका से पशु बनकर रह गये. पशु भी कहना पशुओं का अपमान है क्योंकि पशु अपनी दिनचर्या में अपने दिमाग का इस्तेमाल तो करते हैं। ये लोग तो दूसरे के बताये रास्ते पर चल रहे हैं जिसका फायदा ये लोग बखूबी उठा रहे हैं....

प्रेरक प्रसंग

तो सब पैदल चलेंगे

अभी कुछ दिन पूर्व मुझे एक लेख मिला है। उसमें एक घटना पढ़कर मैं उछल पड़ा। महात्मा हंसराज, प्रि. दीवानचन्दजी, कानपुर तथा प्रिंसिपल साईंदासजी श्रीनगर गये। तभी वहाँ आर्यसमाज का उत्सव रक्खा गया। महात्मा हंसराजजी को उनके निवासस्थान से उत्सव के स्थान पर पहुँचाने के लिए डी. ए. वी. कालेज के एक पुराने स्नातक अपना निजी टाँगा लेकर आये। वह स्नातक वहाँ मुंसिफ के पद पर थे।

महात्माजी और उनके साथी टाँगे में बैठ गये। मुंसिफ महाशय भी बैठ गये। आगे गये तो मार्ग में महाशय ताराचन्दजी भी मिल गये। वे भी उत्सव स्थल की ओर जा रहे थे। वे महाशयजी कौन थे, यह निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। उन्हीं ताराचन्दजी ने स्वयं आर्य गजट में यह घटना लिखी। मेरा विचार है कि ये महाशय ताराचन्द (स्वामी अमृतानन्दजी) ही थे। महात्माजी ने उन्हें, भी टाँगे पर बैठने के लिए कहा। उन्होंने कहा, ''नहीं मैं पैदल ही आ जाऊँगा। आप चलिए।''

टाँगे में केवल चार सवारी ही बैठ सकती थी, ऐसा राजनियम था। इसपर महात्मा हंसराजजी ने कहा-''तो हम सब पैदल ही चलेंगे।'' यह कहकर वे उतर पड़े और यह देखकर साथी भी उतर गये। तब मुंसिफ ने कहा ''टाँगा ड्राईवर पैदल आ जाएगा। मैं टाँगे का ड्राईवर बनता हूँ।'' ऐसे शिष्ट एवं विनम्र थे मुंसिफ महोदय और त्यागी तपस्वी महात्मा हंसराजजी!

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव ऋषि पर्व के रूप में मनाएँ - धर्मपाल आर्य

ऐसे विशेष अवसरों पर वेद और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ सुझाव

हम सब आर्यजन अपने स्तर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस एवं बोधदिवस को ऋषि पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। आगामी ऋषि पर्व को हम अधिक उत्साह एवं संकल्पशक्ति से मनाएँ और ऋषिप्रणीत साहित्य का वितरण स्टॉल आदि लगाकर करें ताकि ऋषिवर के महान्विचार जन-जन तक पहुँच सके जिससे वैदिक ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सके। - ***सम्पादक***

भारतीय काल चक्र गणना के अनुसार आदित्यों में उत्तम फाल्गुन मास का आगमन होता है तो ऋतुओं के राजा वसन्त भी विराजमान हो जाते हैं। जिनकी उपस्थिति में प्रकृति अपनी निराली छटा चारों ओर

बिखेरना प्रारंभ कर देती है।

दिग्-दिगन्तों में जोश, उमंग, उत्साह, प्रेरणा से ओत्-प्रोत् हरियाली और फूलों की भीनि-भीनि सुगंध से जहां सारा विश्व महकने लगता है वहीं भारतीय जनमानस में एक तीव्र स्फटिंग की तरह क्रांति का संचार करने वाले पर्वों की दिव्य श्रृंखला प्रस्तुत हो जाती है इसीलिए भारतवर्ष को पर्वों का देश कहा जाता है । पर्व -उल्लास एवं प्रसन्नता का द्योतक है। उत्सव अर्थात् उत्साह पूर्वक किए जाने वाले कार्य जो दूसरों में भी उत्साह व प्रसन्नता का संचार कर देते हैं वहीं प्रेरणा दायक कार्य पर्व और उत्सव कहे जाते हैं। इसी वासन्ती पर्वों की श्रृंखला में आने वाले पर्व-वसन्त-पंचमी, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव, होली मंगल मिलन व नववर्ष (आर्यसमाज स्थापना दिवस) जैसे - पर्वो का संगम इस महान ऋतुराज वासन्ती वेला में होने वाला है।

वास्तव में पर्वों की उत्कृष्ट परम्परा भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उसके विशुद्ध रूप उद्देश्य, उद्भव, परिणाम एवं मनाने के वैदिक, सामाजिक और भौगोलिक विधान एवं परम्परा को आगे प्रसारित करते चले जाएं। जिससे लाखों वर्षों पुरानी ये परम्पराएँ इसी प्रकार समाज का दिशा निर्देशन एवं मानव में महानता का संचार करती हुई आगे बढती रहे। ये उदात्त भावनाएँ जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक बृहद् रहस्यों को अपने में छिपाए हैं वही सामाजिक तौर पर भी ये अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को अपने में संजोये हुए हैं।

जब हम वसन्त-पंचमी के परिदृश्य में जाना चाहते हैं तो एक दग्ध चिंगारी हमारे रोंगटे खडे कर देने का कार्य करती है कि एक बालक हकीकत राय धर्म की प्रतिमूर्ति बनकर वीभत्स मृत्यु को सामने देखकर भी धर्म का किसी प्रकार भी त्याग नहीं करता है? उस महान् बलिदानी की यादों को लेकर ये वसन्त-पंचमी हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। फाल्गुन कृष्ण दशमी का पर्व महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के रूप में उनका स्मरण कराता है। जिसका आधारभूत पर्व एक महानपर्व महर्षि बोध दिवस, अथवा महाशिवरात्रि के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन जब हम पौराणिक जगत् में महाशिवरात्रि के हजारो साल के इतिहास को देखते हैं तो समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास और

अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिपात् नहीं होता है। लेकिन सन (1837) की वह महिमा मण्डित महाशिवरात्रि जिसनें एक महत् तत्त्व को जन्म दिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर "ऋर्षि बोध-रात्रि" के नाम से सुविख्यात् हो गई हैं। आज हम उस महान पर्व को वास्तविक स्वरूप में मनाने अथवा वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार प्रसार के दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो सके, कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्न प्रकार है -

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के संबंध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3- नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और बाल प्रतियोगिताओं का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4- महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिक से अधिक प्रयोग ऋषिपर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने की अभी से तैयारी प्रारंभ कर दें।

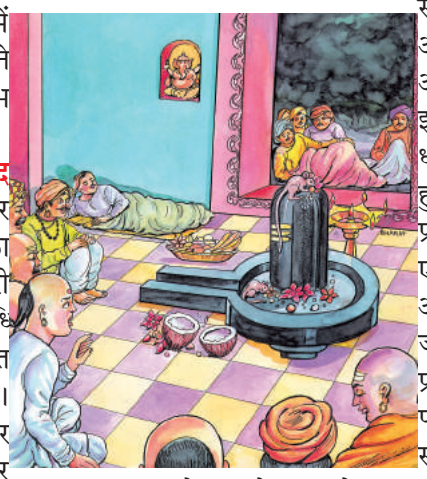

5- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

6- प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद् स्तर पर आयोजन करें ।

7- समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें। अपने घर, परिवार, आस-पास के लोगों को मिठाइयां बांटें। आर्यसमाजें क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टरों, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। इस हेतु बालोपयोगी कुछ वैदिक साहित्य यथा- 'मानव कल्याण के स्वार्णिम सूत्र, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव बैनर, लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द की रंगीन चित्रावली, एवं आर्यसमाज के कार्य एवं इतिहास की जानकारी देता 'एक निमन्त्रण' पत्रक आदि विशिष्ट प्रचार सामग्री विशेष रूप से धर्म प्रचार हेतु दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।

8- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं ।

9- आर्य समाज के स्वार्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा ।

10- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यो जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए ।

11- महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोध दिवस की बधाई 'ऋषि-पर्व की शुभकामनाओं के रूप में अवश्य प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को भेजनी चाहिए ।

उपरोक्त प्रकार से आर्य पर्वो को मनाएँ, इनके उद्देश्य एवं उपयोगिता को संज्ञान में रख अन्यों को भी अवगत कराएं। इस विषय को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एक प्रतियोगिता आयोजित करने जा रही है। प्रतियोगिता को परिणाम आर्य संदेश के माध्यम से आपके समक्ष भेजा जाएगा। इसी प्रकार से प्रतियोगिताओं के माध्यम से भी वैदिक शिक्षा को नई संतति में पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आदिवासी क्षेत्रों मे संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों का निरीक्षण

ठंड की मार से बचाने के लिए गरीब परिवारों को कम्बल वितरण

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों मे संचालित विद्यालयों एवं गुरुकुलों का निरीक्षण करने दिल्ली से एम.डी.एच. के श्री अनिल अरोड़ा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी एवं सेवाश्रम संघ के राष्ट्रीय महासचिव जोगेन्द्र खट्टर जी 20 जनवरी को बामनिया पंहुचे एवं गाँव के निर्धन परिवारों को कम्बल वितरित किये। तत्पश्चात् महाशय जी द्वारा निर्मित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानंद आर्य विद्या निकेतन विद्यालय के छात्रों एवं अभिभावकों के साथ बातचीत की। विद्यालय के निर्माणाधीन कार्यों की समीक्षा करने के पश्चात् समय अभाव के कारण टीम को दो हिस्सों में बांटा गया। श्री विनय आर्य जी ने बामनिया मे विस्तृत रूप से सभी कार्यो की समीक्षा की एवं सभी अध्यापकों के साथ बैठक की वहीं श्री जोगेंद्र खट्टर जी भामल के विद्यालय के लिए आचार्य दयासागर जी एवं जीववर्धन शास्त्री जी के साथ प्रस्थान कर गए।

भामल मे पहले से इंतजार कर रहे गांव के सरपंच उप सरपंच एवं 100 –125 गणमान्य व्यक्ति ने भव्य स्वागत किया। भामल मे कम्बल वितरण के पश्चात संघ के महामंत्री जोगेंद्र खट्टर, श्री जीववर्धन शास्त्री जी के साथ कुशलगढ़ जिला बांसवाड़ा राजस्थान के लिए लिए निकल पड़े। दयानंद सेवाश्रम द्वारा संचालित

– शेष पृष्ठ 7 पर

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. विद्या निकेतन, बामनिया में अभिभावकों के साथ बैठक करते सर्वश्री अनिल अरोड़ा जी, जोगेन्द्र खट्टर, विनय आर्य एवं विद्यालय अधिकारी

महर्षि दयानन्द आर्य प्रा. विद्यालय भामल में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते श्री जोगेन्द्र खट्टर जी साथ में आचार्य जीव वर्धन जी, भामल के उप सरपंच एवं उपस्थित ग्रामीण महिलाएं।

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बामनिया में कम्बल वितरण कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल रमेश नगर में

68वां गणतन्त्र दिवस समारोह सम्पन्न

सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आर्य समाज रमेश नगर में संचालित महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल में 68वां गणतन्त्र दिवस हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सपत्नीक उपस्थित थे। हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक श्री ललित सुमन जी विशेष आमन्त्रित थे। ध्वजारोहण श्री धर्मपाल आर्य जी ने किया। श्री ललित सुमन जी ने अपनी बुलन्द आवाज में भारत माता की जय को

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्रीमती वीणा आर्या जी को स्मृति चिह्न प्रदान करते श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' साथ में हैं श्री ललित सुमन जी

गुंजायमान किया। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी, श्रीमती वीना आर्या जी को फूल मालाओं तथा शाल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह प्रदान करके स्वागत किया। स्कूल के नन्हे मुन्हे बच्चों ने देश भक्ति के गीत, कविताएँ, भाषण प्रस्तुत किए जिसे बहुत सराहा गया। उन्होंने आर्य समाज तथा विद्यालय के पदाधिकारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रधान तथा स्कूल के प्रबंधक को एक लम्बा अनुभव है जिसका लाभ दिल्ली सभा के अन्तर्गत चलने वाले अन्य स्कूलों को भी मिले। स्कूल के चेयरमैन श्री सत्य पाल नारंग जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद व्यक्त किया। – ***मन्त्री***

गुरुकुल देवघर (झारखण्ड) में निर्माण कार्य का निरीक्षण

गुरुकुल महाविद्यालय देवघरधाम (झारखण्ड) में निर्माणाधीन महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के भवन का निरीक्षण करते श्री अनिल अरोड़ा जी (एम.डी.एच. परिवार), श्री विनय आर्य जी (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), एवं श्री भारतभूषण त्रिपाठी जी (प्रधान, झारखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा) एवं अन्य महानुभाव।

Glimpses of the Yajur Veda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Praying for a Healthy Lify of a Hundred Autums

"May we look at the eye, set up by the bounties of Nature, the bright sun, rising in front of us for a hundred autumns; may we live for a hundred autumns; may the power of hearing remain unimpaired for a hundred autumns; may the power of hearinbg remain unimpaired for a hundred autumns; may we speak clearly for a hundred autumns; may we never be indigent in a life span of a hundred autumns, and even much more than a hundred autumns."

"May we, with our eyes listen to what is benficial. O learned ones; may we see with our eyes what is beneficial. May we engage ourselves in your praises, enjoy with strong limbs and sound body, a full term of life dedicated to God."

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतँजीवेम शरद : शतेशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। (Yv, XXXVI.24)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।(Yv, XXV.21)

Taccaksurdevahitam purastacchukramuccarat. pasyema saradah satam jivema saradah satam srnuyama saradah satam prabravama saradah satamadinah syama saradah satam bhuyasca saradah sataat..

Bhadram karnebhih srnuyam deva bhadram pasyemaksa bhiyajatrah. sthirairangaistustuvam sastanubhirvyasemahi devahitam yadayuh..

From 'Vrata' a 'Satya'

"He gains by vow (vrata) the virtue of consecraion (diksa), by effidcency he gains faith (sraddha) and through faith comes the knowledge of truth (satya)"

"O Adorable God, upholder of vows, I have determined to observe a vow. May I be able to accomplish it with success. Renouncing falsehood, I hereby embrace truth."

Vrata, thus, leads to Satya, stage by stage and Satya (enlightenment) once attained leads to higher and higher truths. Pursuance of truth continues on an endless journey with austerity (tapas). The process goes on throughout the cycles of life.

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।(Yv, XIX.30)

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। (Yv, I.5)

Vratena diksamapnoti diksaya pnoti daksinam. daksina sraddhamapnoti sraddhaya satyamapyate..

Agne vratapate vratam carisyami tacchakeyam tanme radhyatam. idamahamamrtat satyamupaimi..

Enjoy but with a Spirit of Sacrifice.

"All what-so-ever exists in this Universe is pervaded by God Supreme. Enjoy it, knowing full well that it will have to be renounced. Do not be greedy. To whom does the wealth belong?", says the verse.

'Bhuynjitha' - do enjoy, but 'Ma grdhah' do not stick to the enjoyment. Sacrifice does not mean to get abstained from enjoyment. It signifies non-addiction to pleasure. Take delight in the beauty and pleasure of the world but with limitation. Enjoy with the mental conviction that a day will positively come when you will have to sacrifice everything. Enjoy with the knowledge that you use the wealth gifted by the Lord. Enjoyment of the fruit of labour of others amounts to stealing. Remember, the world is not meant for an individual but it belongs to all. One suffers when he craves and tries to possess all the wealth of the world considering the same to be his own. The incantation "Tena tyaktena" is very meaninful. One has to forsake the path in every step if he wants to gloriously move ahead. He should remember that the path is only a path and not his permanent dwelling place. Therefore, enjoy gracefully and then renounce.

ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किःा जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।(Yv, XL.1)

Isa vasyamidam sarvam yatkim ca jagatyam jhagat. Tena tyaktena bhunjitha ma grdhah kasya sviddhanam..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें — संस्कृत पाठ - 19 (स)

महर्षि पाणिनि एवम् व्याकरण शास्त्र की अनुपम कृति अष्टाध्यायी

गतांक से आगे....

संस्कृत के कुछ अपभ्रंश शब्द अंग्रेजी में -

मनु = मैन
पितर = फादर
मातर = मदर
भ्रातर =ब्रदर
स्वसा = सिस्टर
दुहितर = डाटर
सुनु = सन
विधवा = विडव्
अहम् = आई एम
मूष = माउस
ऋत =राइट
स्वेद = स्वेट (पसीना)
अंतर =अंडर (नीचे ,भीतर)
द्यौपितर = जुपिटर (आकाश, बृहष्पति)
पशुचर =पाश्चर (चरवाहा)
दशमलव =डेसिमल
ज्यामिति = ज्योमेट्री
पथ =पाथ (रास्ता)
नाम = नेम
वमन = vomity=उल्टी करना
द्वार - डोर (door)
हृत - हार्ट (heart)
द्वि - two
त्रि - three
पञ्च - penta - five
सप्त - hept - seven
अष्ट - oct - eight
नव - non - nine
दश - deca - ten
दन्त - dent
उष्ट्र - ostrich
गौ - cow
गम् - go
स्था - stay
अक्ष- axis
सप्त अम्बर- september
अष्ट अम्बर- october
नबं अम्बर- november
दशं अम्बर- december

इससे यह भी पता चलता है की december 12वाँ नहीं 10वाँ महीना है जो हिन्दी महीनों के अनूरूप है।

एक और शब्द है,

रथ - rad (जर्मन में पहिये को rad कहते हैं) इसी से radius बना है।

संस्कृत ही मूल भाषा है,

अन्य सभी उसके अपभ्रंश एवं विकृत रूप हैं।

कृपया संस्कृत वाक्यों का अभ्यास करते रहें, रुकें नहीं, आप अवश्य ही संस्कृत में बातचीत करना सीख जाएंगे।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

गुरुकुल हरिपुर का तृतीय वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर जुनानी द्वारा संचालित जीवन निर्माण योगाश्रम ओड़िशा के सोनपुर जिला के जीवनदादर ग्राम में 7 व 8 जनवरी 2017 को डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य के सानिध्य में डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में द्विदिवसीय वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अवसर पर गुरुकुल आमसेना के सहयोग से पचास निर्धन परिवारों को कम्बल वितरित किये गये। पं. विशिकेसन शास्त्री, आ. पूर्णानन्द, आ.सुद्युम्न, शुकदेव परिव्राजाकाचार्य, स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती, स्वामी मनीषानन्द सरस्वती, स्वामी ऋतानन्द सरस्वती, पं. धनुर्धर महापात्र, श्री टिकनु साह ने आर्यजनों को प्रेरक प्रवचनों से तृप्त किया। कार्यक्रम की व्यवस्था आश्रम अध्यक्ष श्री रमेश भोई व उनके सहयोगियों ने की।

- दिलीप कुमार जिज्ञासु

बोध कथा

अनन्य भक्ति से ही प्रभु कृपा

सरस्वती नदी के तट पर अकेले ही बैठे थे श्री वेदव्यास जी। उनका चित्त कुछ खिन्न-सा था। मुख पर उदासी थी। अपने-आप ही बोल उठे-''बाल्यकाल में मैं सदाचारी रहा। वेद, गुरु, अग्नि की सेवा निष्कपट-भावना तथा शुद्ध अन्तः-करण से की। सदा उनकी आज्ञा-पालन को कर्त्तव्य समझा। वेद-आदेश सर्वसाधारण के पास भी पहुंच जाये, इस उद्देश्य से ग्रन्थ भी लिखे, परन्तु यह क्या बात है कि जीवात्मा फिर भी प्रसन्न नहीं? ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अभी किसी त्रुटि के कारण कृतार्थ नहीं हुआ....''

वह अभी कह ही रहे थे कि इतने में देवर्षि नारद जी सामने आते दिखाई दिये। श्री नारद मुनि जी के आते ही श्री वेदव्यास जी उनसे कहने लगे-''नारद जी! आप सारे देशों में शांति और आनन्द का प्रसार करते हैं। कृपया मुझे भी बताइये कि इतनी विद्या प्राप्त करने के पश्चात् भी मुझमें क्या न्यूनता है कि अपेक्षित शान्ति प्राप्त नहीं हुई?''

उत्तर में नारद जी ने कहा-''विप्रर्षि! आपने अपनी ओर से तो कोई बात उठा नहीं रक्खी, परन्तु अभी एक न्यूनता रह गई है। उसी के कारण अभी पूरी प्रभु-कृपा नहीं हुई है और अब जब तक प्रभु-कृपा नहीं, तब तक शान्ति कहाँ?''

और प्रभु-कृपा होती है-ईश के साथ सच्ची रति (प्रेम) होने से। इसी को भगवान् के प्रति 'अनन्य भक्ति' कहते हैं।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया स्वामी प्रज्ञानन्द प्रज्ञाभूषण सम्मान से सम्मानित

वैदिक विद्वान वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी को संस्कारधानी जबलपुर (म.प्र.) की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था 'कादम्बरी' ने 2016 के साहित्यकार/पत्रकार सम्मान सहारोह के अवसर पर मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को अपने सर्वोच्च सम्मान 'स्वामी प्रज्ञानन्द प्रज्ञाभूषण सम्मान' से सम्मानित किया गया है। सम्मान रूप में श्री कथूरिया जी को मोतियों की माला, प्रशस्ति पत्र एवं 21 हजार रुपये की मानराशि प्रदान की गई। यह सम्मान रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र एवं प्रख्यात समालोचक आचार्य कृष्णकान्त चतुर्वेदी ने प्रदान किया। **-चन्द्रशेखर शास्त्री**

आर्यसमाज अशोक विहार-1 में साँख्य दर्शन पर चतुर्दिवसीय कार्यशाला

आर्य समाज अशोक विहार फेस-1 दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य समाज प्रांगण में स्वामी विवेकानन्द जी रोजड़ के सानिध्य में साँख्य दर्शन पर 23 से 26 मार्च 2017 सायं 6 से 6.20 बजे तक चतुर्दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। संध्या एवं भजन सायं 6.20 से 8.30 बजे तक आयोजित होगी। कृपया अपने आगमन की सूचना मो. 9891610320, 9811122320 पर देने की कृपा करें।

- जीवनलाल आर्य, मन्त्री

22वाँ रोग निदान शिविर

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति के तत्त्वावधान में हरीश हॉस्पिटल के सौजन्य से 22वाँ रोग निदान शिविर का आयोजन वैदिक विद्या मंदिर, स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सज्जन सिंह कोठारी (लोकायुक्त राजस्थान, जयपुर) के करकमलों द्वारा किया जाएगा।

-डॉ. हरीश गुप्ता संयोजक

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी का 49वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज श्री निवासपुरी नई दिल्ली-65 का 49वां वार्षिकोत्सव 8 से 12 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर भजन आचार्य सतीश सत्यम् जी के तथा प्रवचन आचार्य संजय शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र कुमार, डॉ. देव शर्मा एवं आचार्य सूर्यदेव शास्त्री के होंगे। समापन समारोह के अवसर पर आर्य पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा 'पापा की परी' का मंचन किया जाएगा।

- सुशील आर्य, मन्त्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 50 वाँ वार्षिकोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना अपना 50वां वार्षिकोत्सव 11 से 13 फरवरी 2017 को होगा जिसमें उच्चकोटि के अनेक विद्वान् तथा राजनेता पधार रहे हैं।

-स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मोती नगर, नई दिल्ली

प्रधान : श्री राजभरत भारद्वाज
मन्त्री : श्रीमती अनीता वधवा
कोषाध्यक्ष : श्रीमती प्रभात भारद्वाज

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग, खलासी लाइन, सहारनपुर (उ.प्र.) में सम्पूर्ण वैदिक संस्कारों हेतु विद्वान, गृहस्थी पुरोहित की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें:-

मंत्री, मो. 09358697035

प्रवेश सूचना

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना-141002 में सत्र 2017-2018, छठी कक्षा में (+9 से -11 वर्ष) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (100/-) भरकर 31 मार्च 2017 तक गुरुकुल कार्यालय में जमा करवाएं।(पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।) -कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 02 अप्रैल 2017 रविवार को प्रात: 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-मंगत राम मेहता, कुलपति

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मयूर विहार फेज-2 के तत्त्वावधान में 14 जनवरी से 12 फरवरी 2017 के मध्य ऋग्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सुरेन्द्र कुमार वेदालंकार जी एवं भजन श्री बाल किशन, प्रवचन डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी होंगे।

-ओम प्रकाश पाण्डे, मंत्री

ऋग्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर

आर्य समाज मोहम्मदगंज के प्रथम वैदिक महोत्सव के अवसर पर ऋग्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर का 21 से 28 फरवरी 2017 के मध्य शिव मंदिर के पास, विचलाडिह, मोहम्मदगंज पलामू (झारखण्ड) में आयोजित किया जा रहा है।

पृष्ठ 5 का शेष

कुशलगढ़ आश्रम में पंहुचकर वहां के संचालक श्री दिलीप शास्त्री जी एवं वहां के ब्रह्मचारीगण का उत्साह देखने लायक था। श्री जीववर्धन शास्त्री जी ने बताया कि कुशलगढ़ आश्रम के लिये राजस्थान के आदिवासी मंत्री श्री नन्दलाल मीणा जी ने 62 लाख की राशि मंजूर की है। इसके लिए जीववर्धन शास्त्री, आचार्य दयासागर जी, दिलीप शास्त्री एवं वंहा के विधायक महोदय धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की ओर से पूरी टीम, क्षेत्रीय विधायक एवं आदिवासी मंत्री जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

कुशलगढ़ के पश्चात विनय जी, आचार्य दयासागर जी, जीववर्धन शास्त्री जी एवं जोगिंद्र खट्टर जी, थांदला आश्रम के अध्यक्ष श्री विश्वास सोनी जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती सोनी जी सभी थांदला आश्रम पंहुचे ।

छात्र छात्राओं से वेद मन्त्र इत्यादि सुनने एवं उनसे बातचीत करने के पश्चात् अध्यापकगणों से वहां का जायजा लिया एवं भोजन उपरांत दिल्ली के लिए प्रस्थान किया।- *महामंत्री, दयानंद सेवाश्रम संघ*

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के.....

श्रीमती तृप्ता शर्मा ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसे सहमति देते हुए सम्पुष्ट किया गया।

सत्र 2016-17 में ग्रीष्मकालीन अवकाश में शिक्षकों की कार्यशालाएं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुईं। ये कार्यशालाएं दयानन्द पब्लिक स्कूल ग्रेटर कैलाश -2, रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल राजा बाजार, बिडला आर्य गर्ल्स कन्या सी. सै. स्कूल, दयानन्द मॉडल स्कूल विवेक विहार एवं महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल मोतीनगर में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। जिसमें सैकड़ों शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। श्री सुरेन्द्र रैली जी, श्री विनय आर्य जी एवं डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने इस कार्यशाला में अपने विचार प्रस्तुत किये। बच्चों की वर्कशॉप नहीं हो पाई।

अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताएँ विभिन्न विद्यालयों में बड़े ही रुचिकर ढंग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई जिसमें नुक्कड़ नाटक एवं समूहगान प्रतियोगिता की वीडियो रिकॉर्डिंग भी की गयी सभी प्रतियोगिताओं का विवरण एवं पुरस्कृत बच्चों के चित्र आर्य सन्देश में दिए गये। नवम्बर माह में हुई खेलकूद प्रतियोगिता पर विस्तार से चर्चा की गयी। इसमें बहुत अधिक विद्यालय भाग नही ले पाए, इस पर अनेक सुझाव दिए गए। श्री संजय कुमार जी ने कहा कि अप्रैल में यह प्रतियोगिता होनी चाहिए। इस हेतु श्री संजय कुमार जी, श्री पाल जी व श्री रावत जी की एक समिति का गठन किया गया।श्री कीर्ति शर्मा जी ने सुझाव दिया कि प्रतियोगिताओं को आकर्षक बनाने के लिए अच्छे पुरस्कार होने चाहिए। प्रचार-प्रसार होना चाहिए ताकि बच्चों का उत्साहवर्धन हो सके।

श्री विनय जी ने इसका समर्थन करते हुए कहा-''सभी प्रतियोगिताओं को भव्य रूप देने के लिए किसी ट्रस्ट या व्यापारिक संस्थान आदि के द्वारा प्रायोजित कराया जाना चाहिए। दूसरा कुछ प्रतियोगिताएं जैसे चित्रकला, नारा लेखन या भाषण आदि अपने-अपने विद्यालय में कराई जा सकती हैं।''

इस वर्ष केवल चार प्रतियोगिता होगी, एकांकी, नुक्कड़ नाटक समूहगान एवं आशुभाषण प्रतियोगिता क्योंकि 22 जुलाई 2017 को तालकटोरा स्टेडियम में भव्य सांस्कृतिक उत्सव होगा जिसका विषय में देश व राष्ट्र मुख्य होगा।

श्री अरविन्द जी ने उत्सव के निर्देशक होने की बात पर बल दिया। इस पर श्री सत्यानन्द आर्य, श्री संजय कुमार जी, श्री योगेश जी, श्री कीर्ति शर्मा जी, श्रीमती उषा रेहानी, श्रीमती नीरज मेहदीरता की एक समिति का गठन किया गया।

विनय जी ने कहा ''सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं की एक स्मरणिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मरणिका का विमोचन उत्सव में किया जाएगा। इसमें विद्यालय खोलने का उद्देश्य, भवन का चित्र स्थापना कब हुई व सस्थापक और प्रबन्धक कौन रहे। विशेष उपलब्धियां या किसका विशेष योगदान रहा, प्रकाशित होगा। श्रीमती डॉ. उमा शशि दुर्गा जी इसके संपादक का कार्यभार सौंपा गया।

महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने कहा कि गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

सुरेन्द्र रैली जी ने धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्य विद्या परिषद द्वारा बड़े ही सुचारू ढंग से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोई भी कार्य हो बाधाएँ तो आती हैं फिर भी हम उसमे रास्ता बनाकर आगे बढ़ना होता है। श्री ए. के. धवन जी ने विद्यालय में बैठक रखने के लिए सभा का धन्यवाद किया।

-सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सोमवार 30 जनवरी, 2017 से रविवार 5 फरवरी, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2/3 फरवरी, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 फरवरी 2017

आर्य समाज त्रीनगर, नई दिल्ली के
भवन पुनर्निर्माण का शिलान्यास समारोह सम्पन्न

आर्य समाज त्रीनगर, दिल्ली के नये भवन का भव्य शिलान्यास समारोह 14 जनवरी 2017 को बड़े धूमधाम से स्वामी विश्सवानन्द सरस्वती गुरुकुल विजय नगर, दखोला आगरा के सानिध्य में एवं श्री सन्तोष बंसल प्रधान आर्य समाज त्रीनगर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के नये भवन की आधारशिला महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच. चेयरमैन) के करकमलों द्वारा रखी गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसमें यजमान सर्वश्री संजय बसौया, वेद प्रकाश आर्य, नरेन्द्र कालरा, मनीष भाटिया जी थे। भूमि पूजन श्री सुरेन्द्र गुप्ता प्रसिद्ध समाजसेवी ने किया। समारोह में दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री जितेन्द सिंह तोमर, विधायक, सुरेश गर्ग, निगम पार्षद (डिप्टी चेयरमैन, सिविल लाईन), धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज भवन निर्माण में अपना-अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया गया तथा आर्य समाज जी जरूरतों पर प्रकाश डालते हुए अपने-अपने विचारों से सभी आर्यजनों को अवगत कराया। कार्यक्रम के अन्त में श्री ज्ञानचन्द कालरा जी के सौजन्य से प्रीतिभोज की व्यवस्था की गई।

– अजय कालरा, मन्त्री

आर्यसमाज के नए भवन का शिलान्यास करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य समाज त्रीनगर के अधिकारी, सदस्य एवं आमन्त्रित अतिथिगण।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह